P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र के बी.टी.सी. संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

भुवनेश्वर सिंह मस्तैनया
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झाँसी, उ0प्र0

सारांश

शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जन–चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा हैं। विभिन्न शोधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि विभिन्न राष्ट्रों में उनके विशिष्ट सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कतिपय चर लेकर शोध कार्य सम्पन्न किये गये है। किन्तु इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन नहीं किया गया है कि लिंग वर्ग पर्यावरण जागरूकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। उक्त परिसन्दर्भो में यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों में क्या अन्तर है ? उक्त यक्ष प्रश्न के उत्तर के परिप्रेक्ष्य में ही शोधार्थी ने *' बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन'* किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श हेतु झाँसी शहर के बी.टी.सी. संस्थानों से 30 पुरूष एवं 30 महिला अध्यापकों को चयनित किया गया। बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों के मापन हेतु 'डा0 हसीन ताज' द्वारा निर्मित 'Environmental Atitude Scale' का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप पाया गया कि बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तिया उच्च स्तर की है। बी.टी.सी. स्तर के पुरूष व महिला अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

शोधार्थी ने इस समस्या से पर्यावरण विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है। पर्यावरण अभिवृत्ति को विकसित करने के लिए वेदों में उद्धरित श्लोकों के अर्थ को जानकर उसका प्रयोग करें। मानव व प्रकृति के मध्य प्राचीन सम्बन्ध को विकसित करें। प्रजातांत्रिक मूल्य व पारिवारिक मूल्य व संस्कृति का भी पर्यावरण अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। अतः पर्यावरण विशेषज्ञ पर्यावरण संरक्षण हेतु इन मूल्यों के विकास हेतु प्रयास करें तथा पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित करने में अन्य साधनो के साथ इनका भी प्रयोग करें, तो पर्यावरणीय संकट को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी। शिक्षक विभिन्न विषयों के शिक्षण करते हुये अपनी संस्कृति के उदाहरण उद्धरित करें, वास्तविक धर्म पर शिक्षण को आधारित करें तथा विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा उन मूल्यों को छात्रों में विकसित करे। इस दृष्टि से शिक्षको को पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित करने में अधिक अच्छे प्रयास प्राप्त होंगे।

मुख्य शब्द : बी.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी, पर्यावरणीय अभिवृत्ति, बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र ।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जन–चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा हैं। पर्यावरणीय रक्षा

हेतु विश्वस्तरीय प्रयास भी किए गये हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का ध्यान इस ज्वलंत समस्या की ओर है। विश्व स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में रिपब्लिक ऑफ कोरिया में नेशनल काउन्सिल की स्थापना प्रकृति के संरक्षण के लिए की है। जो कि राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने का कार्य सम्भालती है।

पर्यावरण के अध्ययन के सन्दर्भ में यूनेस्को कार्य समिति (1970) तथा मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम (1972) में आयोजित हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी यही बात रखी गई कि पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम की सम्भावना को मूर्त रूप दिया जाये।

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन (1977) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों का प्रतिपादन किया गया। जिसमें सभी स्तरो तथा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया गया। विश्वस्तरीय प्रयासों के साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक नवीन संस्थाओं का गठन हुआ तथा समय–समय पर विभिन्न आयोगों ने भी पर्यावरणीय संरक्षण हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा को सम्मिलित करने का सुझाव दिया। माध्यमिक स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा इस क्षेत्र में विशेष बल दिया जा रहा है। विभिन्न आयोगों के सुझावों के फलस्वरूप पर्यावरणीय शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर रखा गया है। बी.टी.सी. स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम के द्वारा एक निश्चित सीमा तक छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। 'डॉ0 जाकिर हुसैन' चाहते थे कि पर्यावरण तथा उत्पादन कार्यो को सीखने के केन्द्रों के रूप में प्रयोग किया जाये। उनका कथन था कि गाँधीजी की बेसिक शिक्षा में सहसम्बन्ध के तीन केन्द्र है– प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, हस्तकार्य। इन केन्द्रों का प्रयोग बालक की उच्चतम योग्यता को विकसित करने के लिए करना चाहिए। 'कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संस्तुति की गयी कि छात्रों को भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के संन्दर्भ में जानकारी दी जानी चाहिए तथा विद्यालय के अध्ययन विषयो के साथ पर्यावरण अध्ययन को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

परन्तु निश्चय ही यह विचारणीय प्रश्न है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करने के बाद भी उसके उद्देश्यों की प्राप्ति विफल रही है। इस असफलता का क्या कारण है ? इसका अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण पाश्चात्यवाद एवं औद्योगिक विकास के फलस्वरूप हमारी संस्कृति का ह्रास है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों के बाद भी परिणाम नकारात्मक रहे तथा शिक्षित वर्ग को वातावरण के प्रति जागरूक बनाने में असफल हैं। भारतीय संस्कृति का ह्रास एवं आसुरी संस्कृति तथा भौतिकवाद का उदय ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता के उद्देश्यों की प्राप्ति में बाधक है।

यद्यपि पर्यावरणीय अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनेक शोध अध्ययन सम्पूर्ण विश्व यथा– अमेरिका, फ्रांस, इग्लैण्ड, रूस, अरब देश, पाकिस्तान, भारत, चीन, वियतनाम, इण्डोनेशिया, जापान में सम्पन्न हुये, अनेक लेख भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका Spalish में प्रकाशित हुये है तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न संगोष्ठियों के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के लिए चतुर्दिश प्रयास किए जा रहे है, जिनमें विद्यार्थियों एवं समाज को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाना प्रमुख है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न स्तरों यथा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, व्यवसायिक विशेष रूप में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण पाठ्यक्रम तथा विषयवस्तु, पर्यावरण जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में यौन–भैद, सामाजिक–आर्थिक स्तर, शिक्षा स्तर, आवासीय संस्कृति (ग्रामीण-शहरी) आदि चरो के परिप्रेक्ष्य में अनेक सर्वेक्षणात्मक एवं प्रयोगात्मक शोध कार्य सम्पन्न हुये हैं।

इस सन्दर्भ में शोधार्थी सीमित शोध अध्ययनों यथा हर्डी एवं फाक्स (1976)(सज़ागुन एवं पावलॉव (1995); मैक्इलवीने (1996); क्राउच (2004); गुप्ता, ग्रेवाल एवं राजपूत (1981); दवे (1997); राय (2000); अनुदीपिका (2003); भोले एवं भान्गले (2003) आदि को प्राप्त करने में समर्थ रहा है। उक्त दर्शित विभिन्न शोधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर विदित होता है कि विभिन्न राष्ट्रों में उनके विशिष्ट सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कतिपय चर लेकर शोध कार्य सम्पन्न किये गये है। किन्तु इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन नही किया गया है कि लिंग वर्ग पर्यावरण जागरूकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। उक्त परिसन्दर्भो में यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों में क्या अन्तर है ? उक्त यक्ष प्रश्न के उत्तर के परिप्रेक्ष्य में ही शोधार्थी ने निम्न शोध समस्या का चयन शोध के निमित्त किया।

उद्देश्य

बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र के बी.टी.सी. संस्थानों के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावर्णीय अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

बी.टी.सी. *स्तर के पुरूष एवं महिला* प्रशिक्षणार्थियों *की पर्यावरणीय* अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या में प्रयुक्त पदों की व्याख्या

चयनित समस्या में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों की व्याख्या निम्नलिखित है–

बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र

भारत देश के उत्तर प्रदेश प्रांत के बुन्देलखण्ड क्षेत्र पूरब में बांदा जिले के बरगढ़ से लेकर पश्चिम में गुना जिले के ईशागढ़ और उन्नाव में भिण्ड जिले से लहर, दमोह से लेकर दक्षिण में जबलपुर जिले के कैमूर तक फैला है। उत्तर प्रदेश प्रांत के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में झांसी, बांदा, हमीरपुर, जालौन, महोबा एवं ललितपुर जिले है। बुन्देलखण्ड कुल 29471 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। किन्तु अध्ययन और समय को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के झांसी जिले को ही लिया गया है।

बी.टी.सी. प्रशिक्षणार्थी

प्रस्तुत अध्ययन में बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र के बी.टी. सी. (डी.एल.एड.) संस्थानों के ऐसे प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया जो स्नातक स्तर की शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण कर प्राथमिक शिक्षा के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रविष्ट होते हैं तथा जिनकी आयु सामान्यतः 21 से 28 वर्ष के मध्य होती है।

पर्यावरणीय जागरूकता

पर्यावरण जागरुकता का अर्थ व्यक्तियों और सामाजिक समूहों को सम्पूर्ण पर्यावरण व उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति संवेदना और जागरुकता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। इसके अन्तर्गत रोगों से बचाव, भूख, कुपोषण एवं निर्धनता, वनों का विनाश, वन्य जीवन का सम्पूर्णतः नाश, भूमि अपरदन एवं कूड़े कचरे का संचय आदि सम्मिलित है।

न्यादर्श

शोध के सन्दर्भ में प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चयन के निमित्त बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का अनुसरण किया गया। प्रथम स्तर पर यादृच्छिक चयन विधि द्वारा झाँसी शहर से बी.टी.सी. के विद्यालय चयनित किये गये। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों में से 30 पुरूष एवं 30 महिला अध्यापकों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में बी.टी.सी. स्तर के अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मापन हेतु 'डा0 हसीन ताज' द्वारा निर्मित 'Environmental Atitude Scale' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोध से सम्बन्धित एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन व टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणाम तथा विवेचन

बी.टी.सी. संस्थानों के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु पर्यावरणीय अभिवृत्ति परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक–विचलन तथा विभिन्न वर्गों के मध्य मध्यमानों के अन्तर की सत्यता ज्ञात करने के लिये टी–मान की गणना की गयी, जिसे तालिका–1 व तालिका–2 में दर्शाया गया है।

तालिका–1 बी.टी.सी. संस्थानों के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन

संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
60	168.76	36.93

तालिका – 2 : बी.टी.सी. संस्थानों के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के सांख्यिकीय मानों का परिदृश्य

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t	p
पुरूष	30	171.1	52.97	0.453	<.05
महिला	30	166.43	19.30		

तालिका– 1 में प्रदर्शित मध्यमान के मान (168. 76) से स्पष्ट हैं कि बी.टी.सी. संस्थानों के *प्रशिक्षणार्थियों* की पर्यावरणीय अभिवृत्ति उच्च स्तर की है वहीं मानक विचलन का उच्च मान समूह में उच्च विचलनशीलता अर्थात् समूह में विषमजातीयता प्रदर्शित कर रहा है ।

तालिका– 2 में प्रदर्शित सांख्यकीय दृष्टि से 0. 05 स्तर पर असार्थक t मान (0.453) स्पष्ट करता है कि बी.टी.सी. संस्थानों के पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना *' बी.टी.सी. स्तर के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है '* स्वीकृत होती है । चूंकि वर्तमान में 10 वीं कक्षा तक सामान्य विज्ञान का पाठ्यक्रम अनिवार्य है जिसके कारण विद्यार्थियों में भी कुछ सीमा तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक चिन्तन तथा विज्ञान की विषयवस्तु का ज्ञान विकसित हो जाता है, साथ ही वर्तमान में माता–पिता अपने बच्चों के विकास के प्रति अधिक सचेतन व प्रयत्नशील होते हैं तथा बालक व बालिकाओं को समान शैक्षिक व पारिवारिक वातावरण प्रदान करते है, उनके विकास में व्यक्तिगत रुचि लेते हैं, जिसके करण समान शिक्षा, समान पारिवारिक वातावरण, माता–पिता के समान दृष्टिकोण के कारण बालक व बालिकाओं में सामान्य से उच्च पर्यावरणीय अभिवृत्ति तथा अन्तर का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

पर्यावरण के गिरते स्तर ने विश्व समुदाय को चिन्तित कर दिया है इसी परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु सन् 1972 में स्टॉकहोम में अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक देश अपने लोगों में पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति विकसित करें। अगर हम अपनी संस्कृति एवं वेदो, साहित्य पर दृष्टिपात करें तो भारत देश में सर्व मंगलम् व सर्वकुशलम् की संस्कृति तथा सामवेद में वर्णित मानव व प्रकृति के अटूट सम्बन्ध से पर्यावरण सुरक्षित व पल्लवित था। तो आज यह प्रश्न उत्कठिंत होता है कि आज इस पर्यावरणीय संकट काल में अपने अतीत की धरोहर से शिक्षा क्यों न ग्रहण करें तथा संस्कृति व धर्म का आधार लेकर पर्यावरणीय संकट के विकराल राक्षस का वध क्यों न करें। इसी तथ्य को दृष्टिगत कर शोधार्थी ने इस समस्या से पर्यावरण विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है। पर्यावरण अभिवृत्ति को विकसित करने के लिए वेदों में उद्धरित श्लोकों के अर्थ को जानकर उसका प्रयोग करे। मानव व प्रकृति के मध्य प्राचीन सम्बन्ध को विकसित करें। प्रजातांत्रिक मूल्य व पारिवारिक मूल्य व संस्कृति का भी पर्यावरण अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। अतः पर्यावरण विशेषज्ञ पर्यावरण संरक्षण हेतु इन मूल्यों के विकास हेतु प्रयास करें तथा पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित करने में अन्य साधनो के साथ इनका भी प्रयोग करें, तो पर्यावरणीय संकट को दूर करने में सहायता प्राप्त होगी।

इस शोध से प्राप्त परिणाम शिक्षाविदों को चिन्तन के लिए अभिप्रेरित करते है कि वह बी.टी.सी. स्तर की

शिक्षा में धार्मिक मूल्य, प्रजातान्त्रिक मूल्य व पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य तथा संस्कृति का विकास करने हेतु पाठ्यक्रम का सृजन करें। पर्यावरणीय शिक्षा के पाठ्यक्रम में वेदों में उद्धरित श्लोकों का अर्थ तथा प्राचीन समय में मानव व प्रकृति के सम्बन्धों को वर्णित करे। भारतीय संस्कृति के भाव ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' जैसे मूल्य विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन करे, क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम छात्र व छात्राओं में उच्च पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित नही कर रहा है। अतः शोध के परिणामों को क्रियान्वित करने की चेष्टा की जाये तो पर्यावरणीय अभिवृत्ति उच्च स्तर की विकसित होगी। अतः पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता बालकों के अनिवार्य पाठ्यक्रम (core curriculum) में इन मूल्यों को विकसित करने वाले पाठ्यक्रम का सृजन करे तथा शिक्षा नीति निर्धारण करते समय इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन व पुर्ननिर्माण करे।

शिक्षाविदो का कार्य पाठ्यक्रम का निर्माण करना है परन्तु उसका क्रियान्वयन शिक्षक के द्वारा किया जाता है तथा शिक्षक उन्ही मूल्यों को छात्रों में विकसित कर सकता है जिन मूल्यों में वह स्वयं विश्वास करता है। अतः इस शोध से प्राप्त परिणाम शिक्षक ट्रेनिंग विद्यालयों के लिए लाभप्रद होंगे कि वह बी.टी.सी. के पाठ्यक्रम में उन विषयों को सम्मिलित करें जिससे भावी शिक्षकों में धर्म एवं संस्कृति के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित हो जिससे कि वह छात्रों में भी पर्यावरणीय अभिवृत्ति को विकसित कर सकें। शिक्षक विभिन्न विषयों के शिक्षण करते हुये अपनी संस्कृति के उदाहरण उद्धरित करें, वास्तविक धर्म पर शिक्षण को आधारित करें तथा विभिन्न पाठ्यसहगामी क्रियाओं द्वारा उन मूल्यों को छात्रों में विकसित करे। इस दृष्टि से शिक्षको को पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित करने में अधिक अच्छे प्रयास प्राप्त होंगे।

शोध के परिणाम भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों के लिए भी लाभप्रद होगे। वह संचार माध्यम के विभिन्न साधनों के उपयोग से लोगों में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति सकारात्मक रुझान विकसित कर सकेंगे वही विभिन्न धार्मिक विद्वानों एवं सन्तो के माध्यम से वास्तविक धर्म का प्रचार–प्रसार विभिन्न धार्मिक चैनलों द्वारा हो सकेगा, क्योंकि भारत धर्म प्रधान देश है अतः धार्मिक मूल्य विकसित करके तथा इसे पर्यावरण से जोड़कर जन–जन में पर्यावरण अभिवृत्ति विकसित करने में सहायता मिल सकेगी। अतः शोध से प्राप्त परिणाम उपरोक्त सभी के लिए लाभप्रद होगे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Unesco (1976). International workshop on Environmental Education. Belgrade, Yugoslavia, October 1975, Final Report, p. 60 Unesco, Paris.*
2. *Gupta, V.P., Grewal, J.S. & Rajput, J.S. (1981). A study of the environmental awareness among children of rural and urban schools and non-formal education centers. R.C.E, Bhopal. In M.B. Buch (Edi). Third survey of research in Education, New Delhi : NCERT, p. 771.*
3. *Dave, P.N. et al. (1991). Public Achievement at Primary Stage. Ref. in M.B. Buch (Edi). Fifth survey of Research in Education, Vol. 1, New Delhi : NCERT.*
4. *Szagun, G. & Pavlov, V. (1995). Environmental Awareness : A Comparative study of German and Russian adolescents. Youth & Society, Vol. 27(1), pp. 93-112.*
5. *McIlveene, M.H. (1996). A Comparison of Russian and American students' concerns about environmental issues : Implications for environmental education curriculum. Dissertation Abstracts International, Vol. 57, No. 4, October 1996, 1547-A.*
6. *Rai, D.K. (2000). Role of Education and cultural practices in creating environmental awareness. National Journal of Education, Vol. 6, No. 1, pp. 27-33.*
7. ***अनुदीपिका (2003).*** *नगरीय एवं ग्रामीण, कला व विज्ञान वर्ग के छात्रा एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम॰ एड॰ लघु शोध प्रबंध, (शिक्षा), बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।*
8. *Bhole, A.S., & Bhangle, S. (2003). Environmental Awareness among the tribal, rural and urban area school students. In Quest of Bharateeya Shiksha, pp. 4-7.*
9. *Crouch, Carol Vallce (2004). An investigation of perceptions, concerns and awareness of environmental issues among American Indians. Dissertation Abstracts International, Vol. 65, No. 10. 5047-B.*
10. *Balachandran, Sumathi (2013), A study of environmental awareness and environmental ethics among the secondary and higher secondary school students of greater Mumbai, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibarewala University.*
11. *Seyed Mohammad Shobeiri (2014) A comparative study of environmental awareness and attitude of teachers and students of secondary schools in India and Iran, University of Mysore.*
12. ***श्रीवास्तव, कुमकुम (2014****), प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विधार्थियों के लिए स्थानीय संदर्भ में पर्यावरण आधारित शिक्षण, अधिगम, सामग्री का निर्माण तथा उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।*
13. *Patil Surekha Yuvaraj (2014) A study on effect of environmental determinants On academic progress of b ed Trainees, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibarewala University.*
14. *Surinder Kumar (2015) An evaluation of environmental education programme in secondary schools of Punjab, Punjabi University.*
15. *Goswami, Sadhana (2016) A study on the role of women in environment protection with reference to Kamrup district, Gauhati University.*
16. *वलोडा, सुमन, (2018), माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन, श्री जगदीशप्रसाद झबरामल टीबरावाला विश्वविद्यालय झुनझुनु, राजस्थान ।*

17. *Sahu, Sarojini (2018) A study of awareness of environmental pollution among secondary school students of Western Orissa, Sambalpur University.*